

## ❧ ❧ विषयसूची । ❧ ❧

भाष्यन.....पृ० १

इतिहासका महत्त्व ।  
 कथा और जनधृति ।  
 प्रस्तुत इतिहासका महत्त्व ।  
 चौबीस तीर्थकर ।  
 जैनधर्मकी विशेषता ।  
 इतिहास सुधार व शौर्य प्रवर्तक है ।  
 (१) इन्डो बैक्ट्रियन व पार्थियन  
 राज्य.....पृष्ठ ९  
 बैक्ट्रियन पार्थियन राज्य ।  
 राजा मेनेन्डर व जैनधर्म ।  
 शक व कुशन आक्रमण ।  
 महाराज अजेम व जैनधर्म ।  
 काल्काचार्य ।  
 सम्राट् कनिष्क ।  
 विदेशी आक्रमणोंका प्रभाव ।  
 कुशन साम्राज्यमें जैनधर्म ।  
 जैनधर्मका विशाल रूप ।  
 छत्रप राजघश ।  
 छत्रप नहपान ।  
 नहपान व जैनशास्त्र ।  
 नहपान ही भूतधलि हुआ था ।  
 छत्रप रुद्रसिंह जैनी ।  
 शक सम्यत ।

जैन गाथाओंका शक राजा ।

कुशन साम्राज्यका पतन ।

(२) सम्राट् खारवेल .... ३१

कलिगका ऐल चेटिवंश ।

खारवेलका राज्याभिषेक ।

खारवेल राज्यका प्रथम वर्ष ।

खारवेलकी प्रथम दिग्विजय ।

राजधानीमें उत्सव ।

खारवेलका आक्रमण ।

तन सुतियनहर व जनपद नंख्या ।

खारवेलकी रानिया व पुत्रलाभ ।

खारवेलका मगधपर आक्रमण ।

खारवेलका दान व बर्हत् पूजा ।

खारवेलका भारतपर आक्रमण ।

मगधपर आक्रमण व विजय ।

पाञ्चदेशके नरेशकी भेंट ।

तत्कालीन दशा ।

खारवेलका राज्य प्रबंध ।

खारवेलका राजनैतिक जीवन ।

खारवेलका गार्हस्थ्य जीवन ।

„ जैनधर्म प्रभावनाके कार्य ।

जिनवाणीका उद्धार ।

खारवेलका शिलालेख ।

नन्दाब्द ।

कलिंगमें जैनधर्म ।  
खारवेलका अंतिम जीवन ।  
खारवेलका गर्दभिल्ल वंश है ।  
उडिया ग्रन्थोंमें खारवेल ।  
संवतवार विवरण ।

(३) अन्य राजा व जैनधर्म....५७

तत्कालीन जैनधर्म ।  
अहिच्छत्रके वंशमें जैनधर्म ।  
मथुराका नागवंश और जैनधर्म ।  
पांचाल राज्यमें जैनधर्म ।  
कोसाम्बी राज्यमें जैनधर्म ।  
जैन राजा पुष्पमित्र ।  
राजा विक्रमादित्य ।  
विक्रमादित्य व जैनधर्म ।  
विक्रम संवत् ।  
विक्रम व वीरसवत् ।  
दिगम्बर श्वेतांबर सघभेद ।  
दि० जैन संघ व उसके प्रभेद ।  
दि० मतानुसार श्वे.की उत्पत्ति ।  
तत्कालीन जैनधर्म ।  
उपजातियोंकी उत्पत्ति ।  
अप्रवाल वैश्य जाति ।  
खड्डेवालकी उत्पत्ति ।  
ओसवाल जातिका प्रादुर्भाव ।  
लम्बकंचुक जातिका जन्म ।

(४) गुप्त साम्राज्य व जैनधर्म ८८

गुप्तवंशका चन्द्रगुप्त प्रथम ।  
समुद्रगुप्त ।  
चन्द्रगुप्त द्वितीय ।  
चीनी यात्री फाह्यान ।  
चन्द्रगुप्त और जैनधर्म ।  
गुप्तवंशके अंतिम राजा ।  
गुप्त राज्यकी अवनति ।  
तत्कालीन धर्म व साहित्य ।  
दिगम्बर जैन सच ।  
बगकलिंगमें जैनधर्म ।  
गुप्तकालकी कला ।  
उस समयके व्यापारी ।  
हूण राज्य ।  
यशोधर्मा ।

(५) हर्षवर्धन व हुएनत्सांग-१०४

हर्षवर्धन ।  
धार्मिक उदारता ।  
सामाजिक परिस्थिति ।  
चीनी यात्री हुयेनत्सांग ।  
तत्कालीन शिक्षाप्रणाली ।

(६) गुजरातमें जैनधर्म और श्वे०

आगम ग्रंथोंकी उत्पत्ति-११२  
प्रा० गुजरातमें जैनधर्म ।  
इतिहासकालमें गु०का जैनधर्म ।  
मध्यकालमें गु० में जैनधर्म ।

श्वे० आगमकी उत्पत्ति ।  
 श्वे० बौद्ध ग्रंथोंका सादृश्य ।  
 हैहय व कलचूरी राजा ।  
 चालुक्य राजा व जैनधर्म ।  
 राष्ट्रकूट वंशमें जैनधर्म ।  
 चावड़ राजाओंके जैन कार्य ।  
 सोलकी राजा व जनधर्म ।  
 सम्राट् कुमारपाल ।  
 कुमारपालकी साम्राज्यवृद्धि ।  
 जैन मंत्री वाहड़ ।  
 कुमारपाल व जैनधर्म ।  
 कुमारपाल व साहित्यवृद्धि ।  
 कुमारपालका गार्हस्थ्य जीवन ।  
 सोलकी राज्यका पतन ।  
 वाघेल वंश और जैनधर्म ।  
 वस्तुपाल और तेजपाल ।  
 आवूके जैन मंदिर ।  
 वस्तुपालका अंतिम जीवन ।  
 श्वे० धर्मका अभ्युदय ।  
 दिगम्बर धर्मका उत्कर्ष ।  
 (७) उत्तरी भारतके राज्य व  
 जैनधर्म.....१४४  
 राजपूत और जैनधर्म ।  
 कन्नौजके राजा भोज परिहार ।  
 विविध राजवंशोंमें जैनधर्म ।  
 ग्वालियरके राजा व जैनधर्म ।  
 मध्यभारतमें जैनधर्म ।

राजा ईल और जैनधर्म ।  
 मध्य प्रान्तमें जैनधर्म ।  
 धाराका राजवंश और जैनधर्म ।  
 राजा भुज और जैन विद्वान ।  
 अमितगति आचार्य ।  
 राजा भोज और जैनधर्म ।  
 दूवकुंडके कच्छवाहे ।  
 नरवर्मा और जैनधर्म ।  
 कवित्र आशाधर ।  
 बगाल ओड़ीसामें जैनधर्म ।  
 ओड़ीसाके अंतिम राजा ।  
 राजपूतानामें जैनधर्म  
 मेवाडके राणावंशमें जैनधर्म ।  
 मारवाडमें जैनधर्म ।  
 नाडौलके चौहान व जैनधर्म ।  
 राठौड़ोंमें जैनधर्म ।  
 मडोरके प्रतिहार व जैनधर्म ।  
 वागड़ प्रान्तमें जैनधर्म ।  
 अजमेरके चौहान व जैनधर्म ।  
 सिंधु-पंजाबमें जैनधर्म ।  
 तत्कालीन दि० जैन संघ ।  
 उज्जैन व वागका संघ ।  
 प्रसिद्ध दिगम्बराचार्य ।  
 मुनिधर्म ।  
 गृहस्थ धर्म ।  
 अजैनोंकी शुद्धि ।  
 जैनधर्मकी उपयोगिता ।